Roll No : .....

Total No. of Questions : **13**] [Total No. of Printed Pages : **4**

UGA–247

B.A. (Part–II) Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - I

(रीतिकालीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)–

1. (i) केशवदास रचित किन्हीं **चार** ग्रन्थों के नाम लिखिए।

   (ii) ''सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।'' यह पंक्ति किस कवि की है ?

   (iii) 'पद्माकर' के काव्य में प्रकृति-चित्रण को समझाइए।

(iv) 'भूषण' वीर रस के कवि हैं। स्पष्ट कीजिए।

(v) कवि 'देव' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(vi) रीतिकाल का 'शृंगार काल' नाम किसने दिया ? समझाइए।

(vii) रीतिमुक्त काव्यधारा के कवियों के नाम लिखिए।

(viii) 'मन की प्यास प्रचंड न जाई' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ix) नायिका के किन्हीं **चार** भेदों को स्पष्ट कीजिए।

(x) कुण्डलिया छन्द के लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित आठ व्याख्या प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. रे कपि कौन तू ? अक्ष को घातक दूत बली रघुनन्दन जू को।
कौ रघुनन्दन रे ? त्रिसिरा-खर-दूषन-दूषन भूषण भू को।
सागर कैसे तर्‌यो ? जस गो-पद काज कहा ? सिय चोरहि देखो।
कैसे बँधाय ? जू सुन्दरि तेरी छुई दृग सोवत, पातक लेखो॥

3. या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों-ज्यों बूडै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥
इत आवति चलि जाति उत, चली छ-सातक हाथ।
चढ़ी हिडौरें सी रहै, लगीं उसासनु साथ॥
नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बँध्यो, आगे कौन हवाल॥

4. साँसुन ही सों समीर गयो,
अरु आँसुन ही सब नीर गयो ढरि।
पौन गयो गुम लै आपनों अरु,
भूमि गई तनु की तनुता करि॥

'देव' जियै मिलि बेई की आस,

कै आसहू पास अकास रह्यो भरि।

जा दिन तें मुख फेरि हरे हँसी,

हेरि हियो जू लियो हरि जू हरि॥

5. बरन-बरन तरु फूले उपवन-वन,

सोई चतूरंग संग दल लहियतु है।

बन्दी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल है,

गुञ्जत मधुप गान गुन गहियतु है॥

आवै आस-पास पुहुपन की सु-बास सोई,

सोधें के सुगन्ध माँझ सने रहियतु है।

सोभा को समाजु, सेनापति, सुख-साजु-आजु,

आवत बसत रितु-राजु कहियतु है॥

6. रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागत ज्यौ-ज्यौ निहारियौं

त्यौ इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारियौ॥

एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ, सुजान सकोच औ सोच सहारियै।

रोकी रहै न दहै, घनानंद, बावरी रीझ के हाथनि हारियै॥

7. गुण के गाहक सहस नर, बिन गुण लहै न कोय।

जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥

शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।

दोऊ का इक रंग काग सब भये अपावन॥

कह गिरिधर कविराय सुनौ हो ठाकुर मन के।

बिन गुण लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥

8. संतो मगन भया मन मेरा।

अहनिशि सदा एकरस लागा, दिया दरीबै डेरा॥

कुल मर्याद मेंड सब भागी, बैठा भाठी नेरा।

जाति-पाँति कछु समझौ नाहीं, किसकूँ करै परेरा॥

रस की प्यास आस नहिं औरा, इहि मन किया बसेरा।

ल्याव ल्याव याही लय लागी, पीवै फूल घनेरा॥

सो रस माँग्या मिलै न काहू, सिर साटै बहुतेरा।

जन रज्जब तन-मन दै लीया, होय धणी का चोरा॥

9. वेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,

राम नाम राख्यौ अति रसना सुधर में।

हिंदुन की चोटी, रोटी राखी है सिपाहिन की,

कोंधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में॥

मीडि राखे मुगल मरोडि राखे पातसाह,

बैरी पीसि राखे बरदान राख्यौ कर में।

राजन की हद राखी तेग बल सिवराज॥

देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में॥

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

10. ''केशव कठिन काव्य के प्रेत है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

11. "सेनापति को प्रकृति-चित्रण में विशेष प्रसिद्धि मिली है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

12. ''घनानंद प्रेम की पीर के कवि थे।'' इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

13. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।

अथवा

काव्य प्रयोजन से क्या तात्पर्य है ? भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार काव्य प्रयोजनों का विवेचन कीजिए।